पीयर-रिव्यूड जर्नल
जर्नल वेबसाइटः
https://anubodhan.org

अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 3, जुलाई–सितम्बर 2026, पृष्ठ 34–37
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट) 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n3.2026.095

श्रीतन्त्रालोक के आलोक में यामल संघट्ट एवं काम ऊर्जा का आध्यात्मिक रुपान्तरण: एक अनुशीलन

मनोज कुमार मिश्रा [1] & डॉ० हितेश कुमार सिंह [2]

प्राप्तिः 29 जुलाई 2026 / संशोधित: 4 अगस्त 2026 स्वीकृतः 5 अगस्त 2026 / प्रकाशित ऑनलाइन: 8 अगस्त 2026
Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).

शोध–सार

प्रस्तुत शोध पत्र में कश्मीर शैव दर्शन (त्रिक एवं कौल मत) के दो सर्वप्रमुख प्रमाणित ग्रन्थों– आचार्य अभिनवगुप्तकृत 'श्रीतन्त्रालोकाः' (21वां आहनिक) एवं आगम शिरोमणि 'विज्ञान भैरव' तन्त्र के आलोक में मानव शरीर की मूल काम–ऊर्जा के ऊर्ध्वगमन, धारणा और तान्त्रिक 'यामल संघट्ट' विधि का विस्तृत मीमांसात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध की मौलिकता को पुख्ता करने हेतु आधुनिक पाश्चात्य मनोविश्लेषणवाद (सिगमंड फ्रायड के लिबिडो सिद्धांत एवं विलहेम रीच के ओर्गन ऊर्जा विज्ञान) के साथ इसका एक गंभीर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह लेख प्रमाणित करता है कि काम–ऊर्जा का जैविक विसर्जन और स्खलन जीव को पशुत्व के पाश में बांधता है, जबकि तन्त्र की –संक्षोभ–विगम' और 'बिन्दु–धारण' की प्रयोगात्मक विधि काम के क्षणिक सुख को साक्षात नित्य शाम्भवी विश्रान्ति और शाश्वत ब्रहम आनंद में रुपांतरित करने का परमोच्च वैज्ञानिक मार्ग है।

बीज शब्दः तन्त्रालोक, विज्ञान भैरव, यामल संघट्ट, लिबिडो, ओर्गन ऊर्जा, बिंदु–धारण, संक्षोभ–विगम, ऊर्ध्वरिता

प्रस्तावना

काम–ऊर्जा का दार्शनिक प्रस्थान

भारतीय दर्शन की मनीषा में चेतना और ऊर्जा को कभी पृथक स्वीकार नहीं किया गया है। मानव पिंड और संपूर्ण ब्रहमांड में प्रवाहित होने वाली जीवनी–शक्ति का सघनतम भौतिक केंद्र काम–ऊर्जा (Sexual Energy) है।

समकालीन विश्व में काम को लेकर दो ही धाराएं प्रवाहित हैं– प्रथम, इसका पाशविक भोगवाद और द्वितीय, सामाजिक–धार्मिक ग्लानि के कारण इसका बलपूर्वक दमन (Suppression)

आचार्य अभिनवगुप्त विरचित 'श्रीतन्त्रालोकः' और शिव–शक्ति संवाद रुप 'विज्ञान भैरव तन्त्र' इन दोनों संकुचित दृष्टिकोणों का पूर्णतः खंडन करते हैं।

शैव तन्त्र की केंद्रीय स्थापना यह है कि कामेच्छा कोई त्याज्य या अशुद्ध तत्व नहीं है, बल्कि वह स्वयं परम शिव की 'चिति–शक्ति' या 'इच्छा–शक्ति' का ही मानव शरीर में स्पंदन है।

[1] शोध छात्र, दर्शनशास्त्र विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश
✉ मनोज कुमार मिश्रा, E-mail: 25mishramanoj@gmail.com
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश

प्रस्तुत शोध पत्र का मूल प्रयोजन काम–ऊर्जा के इसी अधोगामी जैविक प्रवाह को रोककर उसे परा–संविद् (विशुद्ध चेतना) में परिणत करने के व्यावहारिक और तांत्रिक साक्ष्यों को स्थापित करना है।[1]

पाश्चात्य मनोविज्ञान बनाम शैव तंत्रः फ्रायड, विलहेम रीच और अभिनवगुप्त

काम–ऊर्जा के दार्शनिक धरातल को समझने के लिए आधुनिक पाश्चात्य मनोविज्ञान के साथ इसकी तुलना अत्यंत प्रासंगिक है, जो इस प्रकार हैः

सिगमंड फ्रायड का 'लिबिडो सिद्धांत' (Libido Theory) और तंत्रः पश्चिमी मनोविश्लेषण के जनक सिगमंड फ्रायड ने माना कि मनुष्य के भीतर एक आदिम यौन–ऊर्जा प्रवाहित होती है जिसे उन्होनें 'लिबिडो' कहा। फ्रायड के अनुसार, इस ऊर्जा का दमन (Suppression) करने से मनुष्य मानसिक विकारों (Neurosis) और कुंठाओं से ग्रसित हो जाता है, इसलिए वे काम की स्वाभाविक तृप्ति या 'सब्लीमेशन' (कलात्मक डाइवर्जन) की बात करते हैं।[2] परन्तु फ्रायड की सबसे बडी सीमा यह थी कि वे काम–ऊर्जा को केवल मन और इंद्रियों के भौतिक सुख (Pleasure Principle) तक ही देख पाए। इसके विपरीत, अभिनवगुप्त का तंत्र दर्शन फ्रायड से कई कदम आगे जाता है। तंत्र कहता है कि काम का दमन आत्मघाती है, परंतु उसका केवल लौकिक भोग भी चेतना का ह्रास है। तंत्र काम–ऊर्जा को केवल मन की विकृति नहीं, बल्कि उसे साक्षात 'शिव की इच्छा–शक्ति' मानकर उसे सीधे सहस्त्रार चक्र पर ले जाकर मोक्ष का साधन बना देता है।

विलहेम रीच का 'ओर्गन ऊर्जा विज्ञान' (Orgone Energy) और तंत्रः फ्रायड के प्रख्यात शिष्य विलेहम रीच (Wilhelm Reich) ने फ्रायड के सिद्धान्तों को आगे बढाते हुए 'ओर्गन ऊर्जा' (Orgone Energy) की खोज की। रीच ने सिद्ध किया कि सम्भोग के चरम क्षण (Climax/Orgasm) में जो ऊर्जा उत्पन्न होती है, वह साक्षात ब्रहमांडीय जीवन–ऊर्जा (Cosmic Life Force) है। रीच ने माना कि यदि मनुष्य इस चरम आनंद को बिना किसी मानसिक तनाव के प्राप्त करता है, तो उसका शरीर स्वस्थ और रोगमुक्त हो जाता है। तंत्र दर्शन विलहेम रीच की इस 'ब्रहमाण्डीय ऊर्जा' वाली बात से पूरी तरह सहमत है, परंतु यहॉ भी पाश्चात्य विज्ञान की सीमा प्रकट हो जाती है। रीच मानते थे कि इस ओर्गन ऊर्जा का अनुभव केवल 'स्खलन' (Ejaclation) के माध्यम से ही किया जा सकता है। इसके विपरीत, कश्मीर शैव दर्शन का ऊर्ध्वरिता सिद्धांत यह स्थापित करता है कि स्खलन वास्तव में ऊर्जा का विनाश और क्षय है। तंत्र उस चरम ऊर्जा संक्षोभ को बिना स्खलित हुए शरीर के भीतर रोकने (बिंदु–धारण) और उसे रीढ़ के मार्ग से मस्तिष्क की ओर प्रवाहित करने का परा–विज्ञान सिखाता है, जो रीच की कल्पना से परे है।[4]

काल–मीमांसा और वर्तमान क्षण में कुंडलिनी जागरण

सूक्ष्म शरीर के भीतर काम–ऊर्जा का मार्ग काल (Time) की सीमाओं से मुक्त होकर 'क्षण–विशेष' में ठहर जाना है। मेरुदंड के वाम भाग में स्थित 'इड़ा नाड़ी' भविष्य की कल्पनाओं और वासना की आगामी योजनाओं में भटकाती है, तथा दक्षिण भाग में स्थित 'पिंगला नाड़ी' भूतकाल की स्मृतियों में बांधकर रखती है।

शैव तंत्र का यह परम वैज्ञानिक नियम है कि काम–ऊर्जा का रुपांतरण कभी भी भूत या भविष्य में नहीं हो सकता। वह केवल शुद्ध 'वर्तमान क्षण' (Present Consciousness) में ही घटित होता है, जो 'सुषुम्ना नाड़ी' का आध्यात्मिक मार्ग है। जब 'महापूरक' प्राणायाम और 'गुदमेढ्र आकुंचन' (मूलबंध) द्वारा प्राण को सुषुम्ना में प्रविष्ट किया जाता है, तो मूलाधार के त्रिकोण पीठ पर सोई कुंडलिनी कपाट खोल देती है, और शरीर में हल्का घूमने व चींटियों के चलने जैसा एक भौतिक 'स्पन्द' (Vibration) प्रकट होता है।

इसकी प्रमाणिकता सिद्ध करते हुए 'श्रीतन्त्रालोक' (खण्ड–5, आह्निक 29) का यह साक्ष्य प्रस्तुत हैः

"स्त्रोतोद्वयस्य निष्ठान्प्रमूर्धस्थचक्रबोधनम्।
विश्रामं च समावेशं सुधीनां मरुतां तथा।।142।।"

(श्रीतन्त्रालोक–29.142)

दार्शनिक विश्लेषणः महाचार्य अभिनवगुप्त स्पष्ट करते हैं कि स्त्रोतोद्वय (अर्थात् दो स्त्रोतों–इड़ा और पिंगला) का लय जब सुषुम्ना में होता है, तो वह मरुतों (प्राणों) का भेद करता हुआ सीधे सहस्त्रार चक्र का बोध कराता है, जहॉ चेतना का समावेश (Absolute Rest) घटित होता है।[1]

तांत्रिक यामल संघट्टः उत्तेजना–रहित सक्रियता एवं ध्रुवीयता का नियम

शैव तंत्र के अंतर्गत समागम के क्षणों को एक ब्रहाांडीय चक्र (Cosmic Circuit) माना गया है, जहॉ स्त्री और पुरुष केवल दो शरीरों के धरातल पर नहीं, बल्कि दो ऊर्जा–ध्रुवों–धनात्मक (+/पुरुष तत्व/शिव) और ऋणात्मक (–/स्त्री तत्व/शक्ति) के रुप में परस्पर क्रिया करते हैं। तंत्र इस समागम के क्षणों में मानसिक 'उत्तेजना' (Mental Excitement) को पूरी तरह वर्जित करता है और 'शांत सक्रियता (Calm Activation) की वकालत करता है।

जब पुरुष बिना स्खलित हुए अपनी जाग्रत ऊर्जा से स्त्री के शक्तिचक्र (योनि मंडल) में प्रवेश करता है, तो स्त्री की ग्रहणशील प्रकृति उस ऊर्जा को अपने भीतर समाहित करके उसे 'अनंत गुना' (Multiplied/Magnified) करके पुनः पुरुष के चक्रों की ओर वापस लौटा देती है। ऊर्जा का यह परस्पर विनिमय एक ऐसा अभूतपूर्व चक्र बनाता है जो दोनों साधकों को एक साथ सहस्त्रार चक्र पर ले जाता है।

इसका साक्ष्य 'श्रीतन्त्रालोकः' (खण्ड–5, पृष्ठ–372) का यह श्लोक प्रस्तुत करता हैः

''गमनागमनमेवास्ति कर्णो नयने द्विलिंगसम्पर्के।
तत्तन्मेलवशाद्यो देहान्तराख्ये च यामले चक्रे।।157।।''

(तन्त्रालोक–29.157)

दार्शनिक विश्लेषणः यहॉ 'द्विलिंगसम्पर्के, का साक्षात अर्थ दो लिंगों (स्त्री–पुरुष जननांगों) का स्पर्श है, जहॉ गमनागमन (अर्थात् प्राण एवं अपान वायु) का निरोध करके, बिना उत्तेजना के केवल स्थिर रहना होता है, जिससे चक्राकार ऊर्जा–प्रवाह निर्मित होता है।[1]

संक्षोभ–विगमः क्षणिक सुख का शाश्वत पारमार्थिक आनंद में विलय

साधारण सम्भोग में पुरुष क्षण भर के जैविक सुख (Orgasm) के बाद स्खलित होकर अपनी बहुमूल्य जीवनी–शक्ति (Vital Fluid) को खो देता है, जिससे उसे भारी शारीरिक थकावट महसूस होती है। इसके विपरीत, तंत्र 'ऊर्ध्वरिता सिद्धांत' को प्रतिपादित करता है।

जब कुंडलिनी क्रमिक चक्र–भेदन करती है– स्वाधिष्ठान का रस–आनंद, मणिपुर (सूर्य मंडल) पर प्रचंड तापीय ऊष्मा (Tantric Heat) को धारण करना, अनाहत पर ह्रदय–स्पन्द श्रवण– इन सबको पार करती हुई जब वह सहस्त्रार चक्र में प्रवेश करती है, तो वहॉ 'शम्भुलाभ' (शिव–शक्ति सामरस्य) घटित होता है।

इसका परम दार्शनिक प्रमाण **'श्रीतन्त्रालोकः' (खण्ड–5, पृष्ठ–373)** का यह सर्वप्रमुख श्लोक हैः

''कुचमध्यह्रदयदेशादौष्ठान्तं यदव्यक्तम्।
तच्चक्रद्वयमध्यभागात्करुणा क्षोभविगमसमये यत्।।159।।''

(तन्त्रालोक–29.159)

गहन दार्शनिक मीमांसाः अभिनवगुप्त स्पष्ट घोषणा करते हैं कि शारीरिक समागम से उत्पन्न होने वाले 'संक्षोभ' के जब 'विगम' (शांत/समाप्त) होने का समय आता है– अर्थात् जब साधक बिंदु–धारण द्वारा स्खलन को रोक देता है– तब उस माह–शून्यता में 'नित्यानन्द रस' (शाश्वत पारमार्थिक आनंद) का प्रस्फोट होता है। यहॉ पुरुष का बिंदु स्खलित नहीं होता, बल्कि वह सहस्त्रार से टपकने वाले 'अमृतरस' (द्राक्षारस साम्यता) का पान करके कुंडलिनी को तृप्त करता है और उस महा–ऊर्जा का वापस सुषुम्ना मार्ग से नीचे मूलाधार की ओर ले आता है।[2]

विज्ञान भैरव तन्त्र का साक्ष्यः–समागम–संक्षोभ और पारमार्थिक आनंद

काम–ऊर्जा के इस प्रयोगात्मक रुपांतरण को अचल प्रामाणिकता देने के लिए 'विज्ञान भैरव तन्त्र' के ये केंद्रीय श्लोक इस शोध पत्र की मूल आत्मा बनते हैं।

''शक्त्या संडगमसंक्षोभाच्छवत्यन्तं तत्सुखं स्मृतम्।
तदन्तरानन्दघटं भैरवं रुपमुच्यते।। 68।।''
''आनन्दे महति जाते यद्रूपं समुपजायते।
भावयेत्तन्मयीभूत्वा मानन्दः पारमार्थिकः।। 69।।''

(विज्ञान भैरव तन्त्र–68–69)

गहन आगामिक मीमांसा: भगवान भैरव स्पष्ट साक्ष्य देते हैं कि शक्ति (स्त्री) के साथ समागम (संगम) से जो तीव्रतम ऊर्जावान 'संक्षोभ' (Virational Excitability) उत्पन्न होता है, उसके अंत में महान सुख (तत्सुखं) प्राप्त होता है, वह वास्तव में शरीर का नहीं है।

उस चरम क्षण के अंत में जो अखंड आनंद का घट (घड़ा) फूटता है, वही साक्षात ''भैरव रुप'' (Pure Conciousness) है।

सूत्र 69 स्पष्ट निर्देश देता है कि जब वह 'महान आनंद' (आनन्दे महति जाते) प्रकट हो, तो साथक को बिंदु–पात द्वारा ऊर्जा नष्ट करने के बजाय, अपनी पूरी वृत्ति को 'तन्मयीभूत्वा' (उसी परमानंद में पूरी तरह लीन) कर देना चाहिए।

वही आनंद जीव का 'पारमार्थिक आनन्द' (The Ultimate Divine Bliss) है।[2]

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र यह सिद्ध करता है कि शैव दर्शन में काम–ऊर्जा का अंत विनाश नहीं, बल्कि परा–चेतना में उसका पूर्ण विलीनीकरण है। यह प्रक्रिया 'पुरुष के तांत्रिक उत्तरदायित्व' (Spiritual Obligation) को निर्धारित करती है, जहॉ पुरुष का यह कर्तव्य है कि वह बिना स्खलित हुए स्त्री चेतना को चरम आनंद तक लेकर जाए और वापस सामान्य शान्त अवस्था में प्रत्यावर्तित करें। फ्रायड और विलहेम रीच के पाश्चात्य सिद्धान्तों की तुलना में अभिनवगुप्त का यह तंत्र विज्ञान और विज्ञान भैरव की धारणाऍ काम–ऊर्जा के संरक्षण और उसके पूर्ण पुनरावर्तन (Return Circuit) का एक अत्यंत प्रामाणिक, व्यावहारिक और वैज्ञानिक मार्ग प्रस्तुत करती है।

सन्दर्भ

1. अभिनवगुप्त. *श्रीतन्त्रालोकः (खण्ड–5, एकोनत्रिंशदह्निहम्–29वाँ आहिनक).* व्याख्याकारः राधेश्याम चतुर्वेदी. वाराणसीः चौखम्भा भारती प्रकाशन, संस्करण 2017, श्लोक 142, 157, 159, पृ. सं. 365, 372–373.
2. भैरव. *विज्ञानभैरवः (शैव–शाक्त आगम).* अनुवादक एवं टिप्पणीकारः आचार्य ब्रजवल्लभ द्विवेदी. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास, संस्करण 2018, श्लोक 68–69, पृ. सं. 92–94.
3. फ्रायड, सिगमंड. *थ्री ऐसेज ऑन द थ्योरी ऑफ सेक्सुअलिटी (Three Essays on the Theory of Sexuality).* ए स्टैंडर्ड एडिशन, लंदन, संस्करण 1953. (तुलनात्मक लिबिडो विमर्श हेतु)
4. रीच, विलहेम. *द फंक्शन ऑफ द ऑर्गेज्म (The Function of the Orgasm).* न्यूयॉर्कः ऑर्गन इंस्टीट्यूट प्रेस, संस्करण 1942. (ओर्गन ऊर्जा एवं ब्रहमाण्डीय जीवन–ऊर्जा की तुलना हेतु)
5. वसुगुप्त. *शिवसूत्राणि. क्षेमराज कृत 'विमर्शिनी, टीका सहित.* हिन्दी अनुवादः डॉ. जयदेव सिंह. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास, संस्करण 2012.
6. वसुगुप्त. *स्पन्दकारिका. रामकण्ठकृत 'स्पन्दप्रदीपिका' टीका सहित.* संपादकः प्रो. रामचन्द्र द्विवेदी. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास, संस्करण 2014.